।।परम पूज्य भैयाजी के द्वारा तत्व शुद्धि शिविर।।

अपनी सृष्टि पंचमहाभूतों से बनी है। यही पंचमहाभूत हमारे शरीर में उसी सन्तुलन में है जैसे इस प्रकृति में पाया जाता है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। इसने अपनी सृष्टि और शरीर बने हैं। इन पंचतत्वों का संतुलन ही हमारे सृष्टि और शरीर को सामंजस्य में बनाये रखती है। जैसे इस सृष्टि में इन पंचमहाभूतों का असंतुलन हातेा है वैसे ही हमारे जीवन जीने की पद्धति से अपने जीवन में असन्तुलन निर्मित होता है। इस कारण हमारे शरीर में विकार, तनाव, बिमारियां और अशान्ति आती है और हमारा जीवन दु ःखमय बनता है।

तत्व शुद्धि साधना से शरीर की शुद्धि होकर समता स्थापित होती है, जिससे हमारे जीवन में सुख, स्वास्थ्य,आनन्द का आगमन होता है।

प्रश्न2. मानवीय शरीर से पंचतत्वों का क्या सम्बन्ध है?

उत्तर– मानवीय शरीर पंचेन्द्रियों द्वारा परिसर से जुड़ा होता है और इनकी पंचेन्द्रियों द्वारा ज्ञान ग्रहण करता है। इन एक–एक ज्ञान इन्द्रियों (ज्ञानेन्द्रियों) पर कुछ खास प्रकार का ज्ञान बटोरने का कार्य निर्भर होता है। जैसे किः–

1. पृथ्वी तत्व – नाक (ध्राणेन्द्रि) जिससे खुशबू और बदबू को पहचाना जा सके।
2. जल तत्व – जीव्हा (जीभ) जिससे पदार्थ की स्वादिष्टता जानी जा सके।
3. अग्नी तत्व – आंखें (नेत्र) जिससे दृष्टि सौन्दर्य जाना जा सके।
4. वायु तत्व – त्वचा जिससे कठोर, मुलायम, सुखद स्पर्श, ठण्डे व गर्म को जाना जा सके।
5. आकाश तत्व – कान जिससे सुना जा सकता है।

प्रश्न3 पंचतत्व किस देवता से जुड़े होते हैं

उत्तर : पंचतत्व के अपने देवता और राक्षस होते हैं जैसे किः–

1. पृथ्वी तत्व – ब्रह्मा देवता – डर राक्षस
2. जल तत्व – नारायण देवता – ग्लानि राक्षस
3. अग्नी तत्व – रूद्र देवता – क्रोध राक्षस
4. वायु तत्व – महेश्वरा देवता – दुःख,संताप राक्षस
5. आकाश तत्व – पंचवक्त्रा शिवा – झूठ राक्षस

अगर इन तत्वों में राक्षसी प्रवृत्तियां जागृत होती है तो तत्व अशुद्ध और असंतुलित होत हैं। जिसके कारण तत्वों से जुड़े हुए इन्द्रियां और ऑर्गन्स से गलत प्रभाव जाता है। उसके कारण वह अपना कार्य ठीक प्रकार से नहीं कर पाते। इसके कारण शरीर में बिमारियां आती है तथा मन में विकार उत्पन्न होते हैं और मन की शांति और आनन्द का नाश होता है।

प्रश्न4 क्या इन्हीं पंचमहाभूतों से जुड़े हमारे शरीर होते हैं? उनका मानवीय शरीर पर क्या परिणाम होता है?

उत्तरः मानवीय शरीर में किसी एक या अनेक पंचमहाभूतों के प्रमाण में आवश्यकता से अधिक या कम वृद्धि हो गई तो उनमें एक या अनेक दोष उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे कि–

1. पृथ्वी तत्व :–

इस तत्व का राक्षस डर है। मन में डर आने से व्यक्ति आगे बढ नहीं पाता है और जो परस्थितियां है उन्हें पकड़ लेता है। जैसे पृथ्वी तत्व मे ंगुरूत्वाकर्षण या पकड़ होती है, वैसे ही मनुष्य में भीा पकड़ आ जाती है और वह हर चीज को पकड़ने की कोशिश करता है। इसकारण उसकी ध्राणेन्द्रियां और अस्थि तन्त्र में बिमारी आती है। इसका असंतुलन होना व्यक्ति में अधिक होने पर गुरूत्व शक्ति अर्थात पकड़ का निर्माण करता है। व्यक्ति सभी को अपनी ओर खींच लेता है। पृथ्वी तत्व **मूलाधार** चक्र से जुड़ा होता है। इसलिए इसका असन्तुलन अस्थि संस्था से जुड़े विकार जैसे कि अस्थिशूल, अस्थिभंग, ऑस्टियोरॉसिस आदि विकार।

2. जल तत्वः–

इस तत्व का राक्षस ग्लानी चिन्तन है। इसमें मानव के सदैव चिन्तन करते रहने से यह तत्व अशुद्ध हो जाता है। इसलिए यह तत्व स्वाधिस्ठान चक्र से जुड़ा हुआ है। इस तत्व के असन्तुलन से रक्त प्रवाह में अवरोध, रक्त चाप का बढना या कम होना, वृक्क/ किडनी के कार्यों में विकार आने से जननेन्द्रियों के विकार, साइटिका आदि की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

3. अग्नि तत्वः

इस तत्व के अशुद्धि के कारण व्यक्ति को क्रोध बहुत अधिक आता है। अग्नि तत्व मणिपुर चक्र से जुड़ा हुआ है। इस चक्र के असंतुलन से आम्पलपित्त (एसिडिटी), मधुमेह (डायबिटीज), कर्क रोग (कैन्सर), मस्से (पाईल्स), पाचन से जुड़े विकार व स्नायुतन्त्र में कमजोरी आती है।

4. वायु तत्वः

इस तत्व के असन्तुलन से जीवन संताप और दुःख से भर जाता है। इस तत्व से अनाहत चक्र जुड़ा हुआ होता है और इस तत्व के असंतुलन से दमा (अस्थमा), हृदय रोग तथा फेफड़ों से सम्बन्धित रोग उत्पन्न करता है।

5. आकाश तत्वः

इस तत्व के असंतुलन से व्यक्ति झूठ का सहारा लेता है। जीवन में सच्चाई नष्ट हो जाती है। इस तत्व से विशुद्धि चक्र जुड़ा हुआ होता है। इस तत्व के असंतुलन से थायराईड और गले से सम्बन्धित रोग उत्पन्न होते हैं। व्यक्ति निराशावादी बनता है और कोई भी बिमारी ठीक होने के बाद बार–बार वापिस आती है।

प्रश्न5 क्या तत्वशुद्धि शिविर के द्वारा उपस्थित गणों को फायदा हो सकता है?
उत्तर अगर हम किसी प्रकार से इन तत्वों को शुद्ध और सन्तुलित कर लेते हैं तो हमारा तन निरोगी और मन प्रसन्न हो सकता है। परन्तु इस ज्ञान से साधारण मानव अनभिज्ञ रहता है। उसको इस ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती इसकारण वह इस कार्य को पूर्ण नहीं कर पाता। हमारे सिद्धों के प्राचीन ज्ञान से हमारा मानव समाज वंचित होता जा रहा है। अतः इनकी सहज और सरलता से अनुभूति के लिए प्रभावपूर्ण परिणाम के साथ तत्व शुद्धि अनुभव करें।

प्रश्न 6 यदि तत्व शुद्धि के लिए परम पूज्य भैयाजी मंत्रोच्चारण करते हैं तो क्या मंत्र विज्ञान की शक्ति का आधुनिक विज्ञान के यंत्रों द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है?
उत्तर हाँ। परम पूज्य भैयाजी तत्वशुद्धि के लिए मंत्र शक्ति का उच्चारण करते है अगर किसी पीड़ित व्यक्ति जो तन व मन से दुःखी है उसे क्रिनिएल फोटोग्राफी मशीन के सामने बैठाकर उसकी छवि चित्रित की जाए और जैसे–जैसे मंत्रो का प्रभाव उस पर काम करने लगे वैसे–वैसे उस पर होने वाले सकारात्मक बदलाव इस बात की पुष्टि करते हैं कि मंत्र शक्ति बडी प्रभावशाली होती है और उसका प्रमाण भी आधुनिक विज्ञान में दिया जा सकता है।

परम पूज्य भैयाजी द्वारा मुम्बई में दिसम्बर 2014 को पूरे दिन का 1दिवसीय शीविर का आयोजन किया गया है। यह शीविर मुम्बई के अन्धेरी (पश्चिम) स्थित एक सभागृह में आयोजित किया जायेगा।